



कार्यालय सचिवालय

अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद

International Council of Religions

वेबसाइट: www.icr-int.org

Ref No.:- ICR/2025/68266

Dated:- 15/07/2025

सदस्यता ग्रहण करने के

100 मुख्य कारण एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ जो किसी एकल संगठन में असंभव है

केवल एक सर्वधर्म-परिषद ही ये दे सकती है-कोई एकल-धर्म का, कोई सरकारी योजना, कोई साम्प्रदायिक संगठन नहीं। यह विस्तृत दस्तावेज अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद से जुड़ने के उन 100 अनमोल कारणों, व्यक्तिगत लाभों, आत्मिक अनुभूतियों एवं सामाजिक-पारिवारिक कल्याणकारी प्रभावों को रेखांकित करता है, जो प्रत्येक आमजन मानस के जीवन को सार्थक, सुरक्षित और समृद्ध बनाते हैं।

विषय सूची

क्र०	विवरण
1.	प्रस्तवाना एवं वैचारिक पृष्ठभूमि
2.	100 लाभों का वर्गीकरण ढाँचा
3.	श्रेणी 1: आत्मिक, मानसिक शांति एवं भावनात्मक स्वास्थ्य
4.	श्रेणी 2: व्यक्तिगत विकास, चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान
5.	श्रेणी 3: पारिवारिक सुख, सौहार्द एवं भावी पीढ़ी के संस्कार
6.	श्रेणी 4: सामाजिक प्रतिष्ठा, आदर एवं वैश्विक पहचान
7.	श्रेणी 5: कल्याणकारी सहयोग, आपातकालीन सहायता एवं सुरक्षा कवच
8.	श्रेणी 6: सत्य, सद्भाव, दार्शनिक ज्ञान एवं अंधविश्वास मुक्ति
9.	श्रेणी 7: व्यावसायिक नेटवर्किंग, करियर एवं युवा संवर्धन
10.	श्रेणी 8: सांस्कृतिक उत्सव, कला, साहित्य एवं संवाद संगम
11.	श्रेणी 9: मानवता की सेवा, परोपकार एवं आत्मिक संतोष
12.	श्रेणी 10: वैश्विक शांति, राष्ट्र निर्माण एवं सुरक्षित भविष्य
13.	सदस्यता के प्रभाव का बहुआयामी विश्लेषण
14.	सदस्यता प्रक्रिया एवं संकल्प
15.	निष्कर्ष एवं प्रेरणा संदेश

1
राष्ट्रीय कार्यालय सचिव / National Office Secretary
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religions

अध्यक्ष / सचिव
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद

स्वीकृत / Approved
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religions

प्रस्तावना एवं वैचारिक पृष्ठभूमि

मानव सभ्यता के इतिहास के वर्तमान इक्कीसवीं सदी के संक्रमण काल में जहाँ एक ओर अभूतपूर्व तकनीकी क्रांति, आर्थिक विकास, वैज्ञानिक चमत्कार और भौतिक सुख-सुविधाओं का विस्तार हुआ है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य के अंतर्मन में अगाध अशांति, सामाजिक दूरियाँ, पारिवारिक बिखराव और वैचारिक असहिष्णुता में भी अत्यंत चिंताजनक वृद्धि दर्ज की गई है। आज का मानव बाह्य जगत में तो संपूर्ण ब्रह्मांड को नापने की क्षमता प्राप्त कर चुका है, किंतु अपने ही अंतःकरण, अपने पड़ोस, अपने परिवार और अपने सह-मानवों से दिनों-दिन भावनात्मक रूप से दूर होता जा रहा है। चारों ओर फैली अंधी भौतिकवादी प्रतिस्पर्धा ने व्यक्ति को मानसिक तनाव, भय, एकाकीपन और संशय के गहरे अंधकार में धकेल दिया है। ऐसे वैचारिक संकट और आध्यात्मिक शून्यता के दौर में **अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद** एक ऐसी आलोकित किरण और वैश्विक पावन सेतु बनकर उभरी है, जो समस्त धर्मों, संस्कृतियों, परंपराओं और विचारसरणियों के उदात्त मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को एक सूत्र में पिरोने का युगान्तकारी कार्य कर रही है।

भारतीय ऋषि परंपरा के अमर उद्घोष **वसुधैव कुटुम्बकम्** (संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है), **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** (सत्य एक है, विद्वान उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं) तथा विश्व के अन्य महान धर्मों—इस्लाम के रहमतुल लिल आलमीन (समस्त संसार के लिए करुणा), ईसाई मत के लव दाई नेबर (अपने पड़ोसी से प्रेम करो), बौद्ध धर्म के करुणा व मैत्री, जैन दर्शन के अहिंसा परमो धर्मः व अनेकांतवाद तथा सिख परंपरा के श्ना कोई बैरी नहीं बिगाना, सगल संग हमको बन आई—के शाश्वत संदेशों को व्यावहारिक धरातल पर जीवंत करना ही इस परिषद का परम ध्येय है। धर्म किसी को बांटने, लड़ाने अथवा संकीर्ण परिधियों में बांधने का साधन नहीं, अपितु आत्मा को परमात्मा से और मनुष्य को मानवता से जोड़ने वाला अमृत-तत्व है। जब धर्म अपनी मूल आत्मा को खोकर केवल बाह्य कर्मकांडों, संप्रदायवाद और अंधविश्वासों तक सीमित हो जाता है, तब समाज में विघटन और कलह का जन्म होता है। अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद इसी संकीर्णता के अंधकार को मिटाकर विशुद्ध अध्यात्म, प्रेम, करुणा और तर्कसंगत विवेक का प्रकाश जन-जन तक पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है।

इस परिषद की सदस्यता ग्रहण करना मात्र एक औपचारिक सदस्यता पत्र या प्लास्टिक का पहचान पत्र प्राप्त करने की सामान्य प्रक्रिया नहीं है, अपितु यह एक अत्यंत पावन, दिव्य और जीवन-परिवर्तक संकल्प है। यह स्वयं के व्यक्तिगत अस्तित्व को संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठाकर **विश्व-मानव** के विराट स्वरूप में विलीन करने का महायज्ञ है। जब एक साधारण व्यक्ति इस वैश्विक परिवार का सदस्य बनता है, तो उसके जीवन के प्रत्येक आयाम—आध्यात्मिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, बौद्धिक एवं व्यावसायिक—में एक सकारात्मक और क्रांतिकारी रूपांतरण प्रारंभ होता है। उसे यह प्रत्यक्ष अनुभूति होती है कि वह इस विशाल ब्रह्मांड में अकेला या असहाय नहीं है, बल्कि उसके पीछे लाखों-करोड़ों ऐसे संवेदनशील, प्रबुद्ध और सत्यनिष्ठ भाई-बहनों का एक अभेद्य सुरक्षा कवच और भावनात्मक संबल खड़ा है, जो बिना किसी जाति, पंथ या भाषा के भेद के, हर परिस्थिति में उसके साथ खड़े रहने को तत्पर हैं।

वर्तमान युग में जब सोशल मीडिया और विघटनकारी ताकतों द्वारा नफरत, पूर्वाग्रह और झूठे आख्यानो के माध्यम से दिलों में दीवारें खड़ी की जा रही हैं, तब सर्वधर्म परिषद का प्रत्येक सदस्य समाज में एक सजग शांतिदूत की भूमिका निभाता है। यह परिषद आमजन मानस को न केवल मानसिक शांति, भावनात्मक स्थिरता और आंतरिक संतुलन प्रदान करती

है, बल्कि उसके बच्चों के लिए सुसंस्कृत भविष्य, युवाओं के लिए मूल्य-आधारित करियर मार्गदर्शन, संकट के समय निःशुल्क स्वास्थ्य व कानूनी सहयोग, और वृद्धजनों के लिए आदरयुक्त परिवेश की सशक्त गारंटी भी देती है। यह एक ऐसा मंच है जहाँ व्यक्ति का व्यक्तिगत कल्याण और वैश्विक शांति एक-दूसरे के पूरक बनकर पल्लवित होते हैं।

अतः यह विस्तृत दस्तावेज उन 100 ठोस, व्यावहारिक और हृदयस्पर्शी कारणों तथा बहुआयामी लाभों का प्रामाणिक दिग्दर्शन कराता है, जो यह सिद्ध करते हैं कि "अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद" से जुड़ना आज के समय में प्रत्येक विचारशील, विवेकवान और संवेदनशील इंसान के लिए न केवल श्रेयस्कर है, अपितु उसके जीवन को पूर्णता, सार्थकता और परम संतो" प्रदान करने का सर्वोत्तम मार्ग है।

100 लाभों का वर्गीकरण ढाँचा

आमजन मानस के जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करने हेतु इन 100 मुख्य कारणों एवं लाभों को 10 प्रमुख श्रेणियों में संरचित किया गया है:-

क्र०	लाभ श्रेणी	प्रमुख केंद्र बिंदु / आयाम
1.	आत्मिक एवं मानसिक शांति	आंतरिक सुकून, ध्यान, तनाव-मुक्ति, सकारात्मक जीवनशैली
2.	व्यक्तिगत विकास एवं चरित्र निर्माण	संस्कार, नैतिक उत्थान, नेतृत्व क्षमता, स्पष्ट दृष्टिकोण
3.	पारिवारिक सुख, शांति एवं संस्कार	पारिवारिक सामंजस्य, बच्चों में सुसंस्कार, पारिवारिक परामर्श
4.	समाजिक सम्मान एवं वैश्विक पहचान	प्रतिष्ठा, वैश्विक मंच, समाज सुधारक के रूप में मान्यता
5.	कल्याणकारी सहयोग एवं आपातकालीन सुरक्षा	संकट में सहायता, स्वास्थ्य शिविर, कानूनी व सामाजिक मदद
6.	सत्य, सद्भाव एवं आध्यात्मिक ज्ञान विस्तार	तुलनात्मक धर्म-दर्शन, रूढ़ियों से मुक्ति, सार्वभौमिक सत्य
7.	नेटवर्किंग, करियर एवं युवा मार्गदर्शन	प्रेरणादायक संगति, बौद्धिक संपर्क, करियर व उद्यम सहयोग
8.	सांस्कृतिक उत्सव, कला एवं संवाद संगम	अंतर-सांस्कृतिक उत्सव, सहभोज, कला व विचार गोष्ठियां
9.	मानवता सेवा एवं परोपकार (सच्ची तृप्ति)	असहायों की सेवा, रक्तदान, पर्यावरण, सेवा का आत्मिक आनंद
10.	वैश्विक शांति, राष्ट्र निर्माण एवं भविष्य सुरक्षा	सांप्रदायिक सौहार्द, भावी पीढ़ी का सुरक्षित भविष्य

श्रेणी 1: आत्मिक, मानसिक शांति एवं भावनात्मक स्वास्थ्य

जब हृदय में समस्त मानवता के प्रति सद्भाव जगता है, तब आंतरिक तनाव स्वतः विलीन हो जाता है। यह श्रेणी व्यक्ति के अंतर्मन को शांति और सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण करती है।

3
राष्ट्रीय कार्यालय सचिव / National Office Secretary
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religions

अध्यक्ष / सचिव
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद

स्वीकृत / Approved
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religions

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	आंतरिक शांति एवं मानसिक सुकून की प्राप्ति	सर्वधर्म समभाव की भावना अपनाने से मन के भीतर से द्वेष, ईर्ष्या और पूर्वाग्रह समाप्त होते हैं, जिससे जीवन में गहन शांति का अनुभव होता है।
2.	तनाव, अवसाद एवं मानसिक भटकाव से मुक्ति	परिषद के नियमित ध्यान, सत्संग और सकारात्मक विमर्श सत्र आधुनिक जीवन की चिंता और तनाव को समाप्त करने में अचूक औषधि का कार्य करते हैं।
3.	सार्वभौमिक प्रार्थनाओं की सकारात्मक ऊर्जा	जब विभिन्न धर्मों की पावन प्रार्थनाएं एक स्वर में गूंजती हैं, तो उत्पन्न होने वाली सकारात्मक तरंगें प्रत्येक सदस्य के आभा-मंडल को शुद्ध करती हैं।
4.	पूर्वाग्रहों और संकीर्णताओं से मुक्ति का आनंद	धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय के बंधनों से मुक्त होकर शुद्ध मानवता को अनुभव करने का परम आनंद प्राप्त होता है।
5.	जीवन में उच्चतर उद्देश्य का बोध	केवल अपने और परिवार तक सीमित रहने के बजाय संपूर्ण समाज के कल्याण हेतु जीने से जीवन को एक महान और सार्थक उद्देश्य मिलता है।
6.	भावनात्मक संतुलन एवं विषम परिस्थितियों में संबल	परिषद की संगति सदस्यों में हर परिस्थिति में शांत, स्थिर और विवेकपूर्ण बने रहने की भावनात्मक शक्ति विकसित करती है।
7.	क्षमा, करुणा और असीम प्रेम का अंतःकरण में विकास	सभी धर्मों के मूल मर्म—प्रेम और करुणा—को आत्मसात करने से हृदय निर्मल और स्नेहमयी बनता है।
8.	नकारात्मक विचारों एवं एकाकीपन का स्थायी निवारण	एक विशाल, विचारवान और संवेदनशील परिवार से जुड़ने पर कभी भी अकेलापन या निराशा का अहसास नहीं होता।
9.	आध्यात्मिक संतोष एवं अंतरात्मा की जागृति	कर्मकांडों के परे जाकर ईश्वरीय प्रेम और मानवीय सेवा की गहरी अनुभूति से आत्मिक तृप्ति मिलती है।
10.	निर्मयता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण की स्थापना	सत्य और धर्म के व्यापक स्वरूप को समझने के बाद अज्ञात भयों, रूढ़िवादी आशंकाओं और अंधविश्वासों का अंत होता है।

श्रेणी 2:— व्यक्तिगत विकास, चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान

सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को भीतर से श्रेष्ठ और विवेकवान बनाए। यह श्रेणी व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से संबंधित है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	उच्च नैतिक मूल्यों और संस्कारों का सुदृढीकरण	सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, और निष्ठा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को जीवनशैली में उतारने की निरंतर प्रेरणा मिलती है।

2.	बहु-धार्मिक एवं बहु-सांस्कृतिक साक्षरता का विकास	संसार के प्रमुख धर्मों (हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी आदि) के मूल सिद्धांतों का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त होता है।
3.	प्रखर नेतृत्व क्षमता का निखार	परिषद की विभिन्न स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों, आयोजनों और अभियानों का नेतृत्व करने का स्वर्णिम अवसर मिलता है।
4.	उत्कृष्ट वक्तृत्व एवं प्रभावी संवाद कला	विविध मंचों पर अपने विचार रखने, संगोष्ठियों में संवाद करने से अभिव्यक्ति की क्षमता और आत्मविश्वास में भारी वृद्धि होती है।
5.	विवाद समाधान की कला में दक्षता	पारिवारिक, सामाजिक या कार्यक्षेत्र के मतभेदों को बिना कड़वाहट के प्रेम व संवाद से सुलझाने की परिपक्वता आती है।
6.	आत्म-संयम, धैर्य एवं सहनशीलता का विकास	विभिन्न विचारों और मान्यताओं को शांतिपूर्वक सुनने व समझने से धैर्य और सहनशीलता का स्वाभाविक विकास होता है।
7.	तार्किक, वैज्ञानिक एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण	अंधविश्वास और कट्टरता से हटकर अध्यात्म को विवेक और मानवता की कसौटी पर कसने की दृष्टि मिलती है।
8.	समय प्रबंधन एवं अनुशासित जीवनचर्या	परिषद के रचनात्मक सेवा कार्यों से जुड़ने पर जीवन में अनुशासन और प्राथमिकताओं का स्पष्ट निर्धारण होता है।
9.	समग्र व्यक्तित्व में गरिमा, सौम्यता एवं आकर्षण	जिस व्यक्ति के विचार उदार और आचरण परोपकारी होता है, उसका व्यक्तित्व स्वतः ही सर्वप्रिय और प्रभावशाली बन जाता है।
10.	निरंतर आत्म-निरीक्षण और व्यक्तिगत सुधार की प्रेरणा	उत्कृष्ट संतों, विचारकों और समाजसेवियों के संपर्क से स्वयं की कमियों को दूर करने की निरंतर प्रेरणा मिलती है।

श्रेणी 3:- पारिवारिक सुख, सौहार्द एवं भावी पीढ़ी के संस्कार

परिवार ही समाज की प्राथमिक इकाई है। जब परिवार में शांति और संस्कार होंगे, तभी समाज सशक्त बनेगा।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	पारिवारिक कलह, वैचारिक दूरी एवं तनाव में कमी	परिषद के शांति-सिद्धांत जब घर में अपनाए जाते हैं, तो परिवार के सदस्यों के बीच आदर, क्षमा और आपसी समझ बढ़ती है।
2.	बच्चों में सर्वधर्म आदर एवं उच्च संस्कारों का बीजारोपण	बचपन से ही बच्चे सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना सीखते हैं, जिससे वे नफरत और कट्टरता से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं।
3.	अंतर-पीढ़ीगत सामंजस्य	बुजुर्गों के प्रति आदर और युवाओं की सोच का समन्वय करने के लिए पारिवारिक विचार-गोष्ठियों का लाभ मिलता है।

4.	युवाओं को नशे, भटकाव व असामाजिक तत्वों से सुरक्षा	परिषद का सकारात्मक और रचनात्मक वातावरण युवाओं को गलत संगति, व्यसन और अपराध से दूर रखता है।
5.	विशेषज्ञ पारिवारिक एवं वैवाहिक परामर्श की सुलभता	पारिवारिक संकट या मतभेद के समय परिषद के अनुभवी काउंसलर्स और प्रबुद्ध जनों का निःशुल्क मार्गदर्शन प्राप्त होता है।
6.	संयुक्त एवं सुदृढ़ पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना	एकाकीपन के युग में परिवार को एक सूत्र में पिरोने और संबंधों को प्रगाढ़ करने की सीख मिलती है।
7.	बच्चों के लिए वैश्विक सोच और विस्तृत दृष्टिकोण	परिषद के मंचों से जुड़कर बच्चे संकीर्ण कूपमंडूकता से बाहर निकलकर एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनते हैं।
8.	परिवार सहित पावन तीर्थों एवं सांस्कृतिक यात्राओं के अवसर	परिषद द्वारा आयोजित सद्भावना यात्राओं और हेरिटेज दौरों में पूरे परिवार के साथ भाग लेने का सुअवसर।
9.	घर में सकारात्मक, पवित्र एवं सुखद वातावरण का निर्माण	नियमित आध्यात्मिक व सेवा चर्चाओं से घर का परिवेश ऊर्जावान, शांत और आनंदमय बना रहता है।
10.	बुजुर्गों को सम्मान, अपनत्व और सक्रिय सामाजिक जीवन	परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को परिषद के कार्यों में आदरणीय स्थान और सेवा का सक्रिय मंच मिलता है।

श्रेणी 4:— सामाजिक प्रतिष्ठा, आदर एवं वैश्विक पहचान

एक जागरूक और शांतिप्रिय नागरिक के रूप में समाज और राष्ट्र में आपकी विशेष प्रतिष्ठा स्थापित होती है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	समाज में एक शांतिदूत के रूप में प्रतिष्ठा	आप केवल एक साधारण नागरिक नहीं, बल्कि समाज में सद्भाव और एकता के प्रतिष्ठित प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं।
2.	आधिकारिक सदस्यता प्रमाणपत्र एवं विशिष्ट पहचान पत्र	परिषद द्वारा जारी प्राधिकृत आई-कार्ड और सदस्यता प्रमाण-पत्र जो आपकी सामाजिक साख को पुख्ता करता है।
3.	स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी	प्रतिष्ठित मंचों, सेमिनारों और विश्व शांति सम्मेलनों में प्रतिनिधि के रूप में शामिल होने का अवसर।
4.	विभिन्न क्षेत्रों के शीर्ष गणमान्य व्यक्तियों से सीधा संपर्क	धर्माचार्यों, प्रशासनिक अधिकारियों, न्यायविदों, बुद्धिजीवियों, डॉक्टरों और उद्योगपतियों के साथ साझा मंच।
5.	समाज के प्रबुद्ध एवं विचारवान वर्ग में विशिष्ट स्थान	सार्वजनिक आयोजनों और महत्वपूर्ण सामाजिक विमर्शों में आपकी राय को विशेष महत्व और सम्मान मिलता है।
6.	उत्कृष्ट सामाजिक व मानवीय सेवाओं हेतु मानद अलंकरण	सराहनीय कार्यों के लिए परिषद द्वारा स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रशस्ति पत्र और पुरस्कारों से सम्मान।

7.	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर	विदेशों में आयोजित होने वाले अंतर-धार्मिक संवादों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता की संभावना।
8.	मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं और स्मारिकाओं में विचार प्रकाशन	परिषद के मुखपत्र, पत्रिकाओं और वेबसाइट पर अपने लेख, विचार और अनुभव साझा करने का मंच।
9.	स्थानीय सामाजिक व धार्मिक समितियों में सम्मानित प्रतिनिधित्व	शांति समितियों, नागरिक सुरक्षा परिषदों और सामाजिक मंचों में सदस्य के रूप में प्राथमिकता।
10.	एक निष्पक्ष, न्यायप्रिय और विश्वसनीय व्यक्तित्व की छवि	किसी भी विवाद में आपकी मध्यस्थता को समाज द्वारा निष्पक्ष और स्वीकार्य माना जाना।

श्रेणी 5:— कल्याणकारी सहयोग, आपातकालीन सहायता एवं सुरक्षा कवच

परिषद का विशाल नेटवर्क विपत्ति के समय सदस्यों और उनके परिजनों के लिए एक मजबूत सुरक्षा ढाल का कार्य करता है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	आपातकाल व आपदा में तत्काल सहायता नेटवर्क	दुर्घटना, बीमारी या किसी प्राकृतिक संकट के समय परिषद के समर्पित कार्यकर्ताओं का त्वरित सहयोग।
2.	निःशुल्क एवं रियायती स्वास्थ्य परामर्श व मेडिकल शिविर	परिषद से जुड़े विशेषज्ञ डॉक्टरों, अस्पतालों और पैथोलॉजी लैब्स के माध्यम से चिकित्सा रियायतें।
3.	निःशुल्क विधिक सलाह एवं कानूनी मार्गदर्शन	वरिष्ठ वकीलों और विधिक सलाहकारों के पैनल द्वारा अन्यायरहित कानूनी परामर्श की उपलब्धता।
4.	रक्त मित्र मंडल से त्वरित मदद	आपातकालीन स्थिति में किसी भी ब्लड ग्रुप के रक्तध्लाज्मा की तत्काल व्यवस्था में सहयोग।
5.	प्रशासनिक, सामाजिक व पुलिस तंत्र में न्यायोचित सुनवाई	परिषद के सहयोग से आमजन की वास्तविक समस्याओं को प्रशासन के समक्ष मजबूती से रखने में संबल।
6.	आर्थिक रूप से कमजोर सदस्यों के लिए कल्याणकारी योजनाएं	जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की शिक्षा, पाठ्य-सामग्री और फीस में यथासंभव सामुदायिक सहयोग।
7.	वरिष्ठ नागरिक सहायता प्रकोष्ठ	अकेले रहने वाले बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल, नियमित संवाद और सुरक्षा का विशेष प्रबंध।
8.	महिला सुरक्षा, स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण प्रकोष्ठ	महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, सुरक्षा जागरूकता और कानूनी सहायता का समर्पित नेटवर्क।
9.	सामाजिक बहिष्कार या प्रताड़ना के विरुद्ध सामूहिक सुरक्षा	किसी भी सदस्य के साथ धर्म, जाति या वर्ग के आधार पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध परिषद की एकजुटता।

10.	अंतिम संस्कार एवं शोक संतप्त परिवार को भावनात्मक संबल	दुखद घड़ियों में परिजनों के साथ खड़े होकर अंतिम रीति-रिवाजों और सात्वना में निःस्वार्थ सहभागिता।
-----	---	--

श्रेणी 6:— सत्य, सदभाव, दार्शनिक ज्ञान एवं अंधविश्वास मुक्ति

आध्यात्मिक अज्ञानता और पाखंड से मुक्ति पाकर धर्म के विशुद्ध, वैज्ञानिक और कल्याणकारी स्वरूप को जानना।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	सभी धर्मग्रंथों के सार-तत्व की समझ	गीता, कुरआन, बाइबिल, गुरु ग्रंथ साहिब, त्रिपिटक, आगम और अवेस्ता के साझा मानवीय संदेशों का अध्ययन।
2.	धर्म के नाम पर फैले पाखंड, अंधविश्वास और शोषण से मुक्ति	व्यावसायिक बाबाओं, अंधविश्वासों और भ्रामक कर्मकांडों से बचकर सच्चे अध्यात्म की ओर अग्रसर होना।
3.	ईश्वर एक है, रास्ते अनेक का प्रत्यक्ष दार्शनिक अनुभव	विभिन्न उपासना पद्धतियों के पीछे छिपे एक ही परम सत्य का साक्षात्कार और आदर।
4.	धर्म, विज्ञान और तर्क का अद्भुत समन्वय	अध्यात्म को आधुनिक विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण और मनोविज्ञान की दृष्टि से समझने का अवसर।
5.	कट्टरपंथी प्रचार और फेक नैरेटिव्स की सच्चाई का बोध	सोशल मीडिया पर नफरत फैलाने वाले भ्रामक संदेशों की सच्चाई जानकर समाज को गुमराह होने से बचाना।
6.	दुर्लभ धार्मिक व दार्शनिक पुस्तकों के पुस्तकालय की सुलभता	परिषद के ज्ञान केंद्रों, ई-लाइब्रेरी और अनुसंधान प्रपत्रों तक असीमित अध्ययन पहुंच।
7.	उच्च कोटि के दार्शनिकों एवं संतों के साथ प्रश्नोत्तरी सत्र	मन में उठने वाली गंभीर आध्यात्मिक, दार्शनिक व अस्तित्वगत शंकाओं का तार्किक समाधान।
8.	कर्म सिद्धांत एवं मानवतावादी आचार संहिता का ज्ञान	यह समझना कि मानव सेवा और प्राणी मात्र पर दया ही सबसे बड़ा धर्म और सर्वोत्तम पूजा है।
9.	भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा “सर्वपंथ आदर” का पुनर्जागरण	भारत के गौरवशाली बहुलवादी इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व करने का विवेक।
10.	संकीर्ण संप्रदायवाद से उठकर विश्व मानव बनने का मार्ग	अपने व्यक्तिगत विश्वास को बनाए रखते हुए समूचे संसार को अपना आत्मीय परिवार मानना।

श्रेणी 7:— व्यावसायिक नेटवर्किंग, करियर एवं युवा संवर्धन

सद्भावना के मंच पर बने रिश्ते निष्कपट और दीर्घकालिक होते हैं, जो व्यक्तिगत आजीविका और करियर में भी सहायक बनते हैं।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	एक ईमानदार, मूल्य-आधारित व्यावसायिक नेटवर्क	परिषद के ऐसे व्यापारियों, पेशेवरों और उद्यमियों से परिचय जो ईमानदारी और नैतिकता में विश्वास रखते हैं।
2.	युवाओं के लिए करियर काउंसलिंग और मेंटरशिप प्रोग्राम	विभिन्न क्षेत्रों के सफल विशेषज्ञों द्वारा युवा सदस्यों को करियर, उच्च शिक्षा व प्रतियोगी परीक्षाओं में मार्गदर्शन।
3.	रोजगार, इंटरनशिप एवं कौशल विकास में सहयोग	परिषद से जुड़े संस्थानों और प्रतिष्ठानों में योग्य युवाओं के लिए रोजगार और इंटरनशिप के अवसर।
4.	उद्यमिता और स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन	नए व्यापारिक विचारों और सामाजिक उद्यमों को स्थापित करने हेतु अनुभवी मेंटर्स का सहयोग।
5.	बहु-सांस्कृतिक कार्यस्थल में सहजता	विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ कार्य करने की क्षमता, जो आज की और वैश्विक कंपनियों में अनिवार्य है।
6.	सामूहिक स्वरोजगार एवं महिला स्वयं सहायता समूहों को बल	हस्तशिल्प, गृह उद्योग और लघु उद्यमों को बाजार और प्रोत्साहन दिलाने में सहायता।
7.	वित्तीय साक्षरता एवं नैतिक निवेश की समझ	ईमानदार तरीके से धनार्जन, बचत और समाजोपयोगी निवेश के सिद्धांतों की सीख।
8.	राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक विस्तार का अवसर	अन्य राज्यों और देशों के सदस्यों के साथ विश्वास आधारित व्यापारिक संबंध स्थापित करने का मंच।
9.	डिजिटल स्किल्स और आधुनिक तकनीक का निःशुल्क प्रशिक्षण	परिषद द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में युवाओं को आधुनिक डिजिटल टूल्स और कौशल सिखाना।
10.	व्यावसायिक तनाव और प्रतिस्पर्धा में मानसिक स्थिरता	कार्यक्षेत्र के अत्यधिक दबाव में भी शांत, नैतिक और संतुलित बने रहने का आध्यात्मिक प्रशिक्षण।

श्रेणी 8:- सांस्कृतिक उत्सव, कला, साहित्य एवं संवाद संगम

विविधता ही जीवन का सौंदर्य है। विविध त्योहारों, कलाओं और साहित्यों का मिलन जीवन को उत्सवधर्मी बनाता है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	सभी प्रमुख त्योहारों का सामूहिक और उल्लासमय उत्सव	दिवाली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, नवरोज को मिल-जुलकर मनाने का अद्वितीय आनंद।
2.	अंतर-धार्मिक सहभोज	एक साथ बैठकर भोजन करने से मन के भेद मिटते हैं और आपसी स्नेह का अमृत रस घुलता है।
3.	सूफी, भक्ति, भजन एवं कव्वाली संगीत संध्याओं का आनंद	हृदय को छू लेने वाले भक्ति संगीत और रुहानी कला कार्यक्रमों में निःशुल्क भागीदारी।

4.	शांति और सद्भाव पर आधारित कवि सम्मेलनों व मुशायरों का आयोजन	श्रेष्ठ साहित्यकारों, शायरों और कवियों की रचनाओं को सुनने और मंच साझा करने का अवसर।
5.	सांस्कृतिक कला प्रदर्शनियां, नाटक और विचार गोष्ठियां	नाटकों, नुक्कड़ नाटकों और चित्रकला के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अलख जगाना।
6.	ऐतिहासिक धरोहरों एवं धार्मिक स्थलों के सद्भाव दौरे	मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च और सिनगॉग की वास्तुकला और इतिहास को समझने की यात्राएं।
7.	स्थानीय लोककलाओं, पारंपरिक शिल्पों और कलाकारों को मंच	विलुप्त हो रही लोक संस्कृतियों और कलाकारों को परिषद के माध्यम से संरक्षण और सम्मान।
8.	बहुभाषी संवाद और अन्य भाषाएं सीखने का अवसर	विविध भाषी सदस्यों से मिलकर नई भाषाओं और लिपियों के प्रति रुचि और ज्ञान में वृद्धि।
9.	अंतर-सांस्कृतिक विवाहों व परिवारों को सामाजिक स्वीकृति	रूढ़ियों से परे मानवीय प्रेम पर आधारित परिवारों को परिषद का खुला समर्थन और संरक्षण।
10.	जीवन को बोरियत से निकालकर एक निरंतर उत्सव में बदलना	हर महीने नए रचनात्मक, सांस्कृतिक और मानवीय आयोजनों से जीवन में उमंग और ताजगी बनी रहना।

श्रेणी 9:— मानवता की सेवा, परोपकार एवं आत्मिक संतोष

सेवा ही परमात्मा की सच्ची पूजा है। जब हम किसी का आंसू पोंछते हैं, तो वह सीधा ईश्वर के चरणों में समर्पित होता है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	भूख मिटाने हेतु अन्नपूर्णाश एवं लंगर सेवा अभियान	कच्ची बस्तियों, अस्पतालों के बाहर और असहाय लोगों तक नियमित भोजन पहुंचाने में योगदान।
2.	वस्त्र दान, शीतकालीन कंबल वितरण एवं आश्रय सहयोग	कड़कड़ाती ठंड और मौसम की मार से बेसहारा लोगों को सुरक्षित करने का पुण्य कार्य।
3.	अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और कुष्ठ आश्रमों में सेवा एवं समय दान	उपेक्षित जनों के चेहरों पर मुस्कान लाने और उनके साथ खुशियां बांटने की आत्मिक तृप्ति।
4.	पर्यावरण संरक्षण, वृहद वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण	प्रकृति ही ईश्वर का साक्षात् रूप है मानकर पर्यावरण को हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त बनाने के अभियान।
5.	पशु-पक्षी सेवा, जलपात्र वितरण एवं जीव दया	मूक प्राणियों, पक्षियों और आवारा पशुओं के लिए दाना-पानी और चिकित्सा की व्यवस्था।
6.	प्राकृतिक आपदाओं (बाढ़, भूकंप) में राहत व पुनर्वास कार्य	संकट के समय पीड़ितों तक दवाइयां, भोजन, वस्त्र और पुनर्वास सामग्री पहुंचाने का सामूहिक प्रयास।
7.	गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षा दान प्रकल्प	स्तन बस्तियों में निःशुल्क अध्ययन केंद्र, लाइब्रेरी और शिक्षण सामग्री का वितरण।

8.	नशा-मुक्ति एवं पुनर्वसि जनजागरण अभियान	शराब, ड्रग्स और तंबाकू के शिकार लोगों को नई जिंदगी देने के लिए जागरूकता और काउंसिलिंग।
9.	स्वच्छता अभियान एवं सार्वजनिक स्थलों का जीर्णोद्धार	स्वच्छता में ईश्वर का वास के भाव से सार्वजनिक स्थानों, नदियों और तालाबों की सफाई।
10.	स्वैच्छिक देहदान एवं अंगदान जागरूकता अभियान	मृत्यु के बाद भी किसी को रोशनी और नया जीवन देने के पुनीत संकल्प को जन-जन तक पहुंचाना।

श्रेणी 10:— वैश्विक शांति, राष्ट्र निर्माण एवं सुरक्षित भविष्य

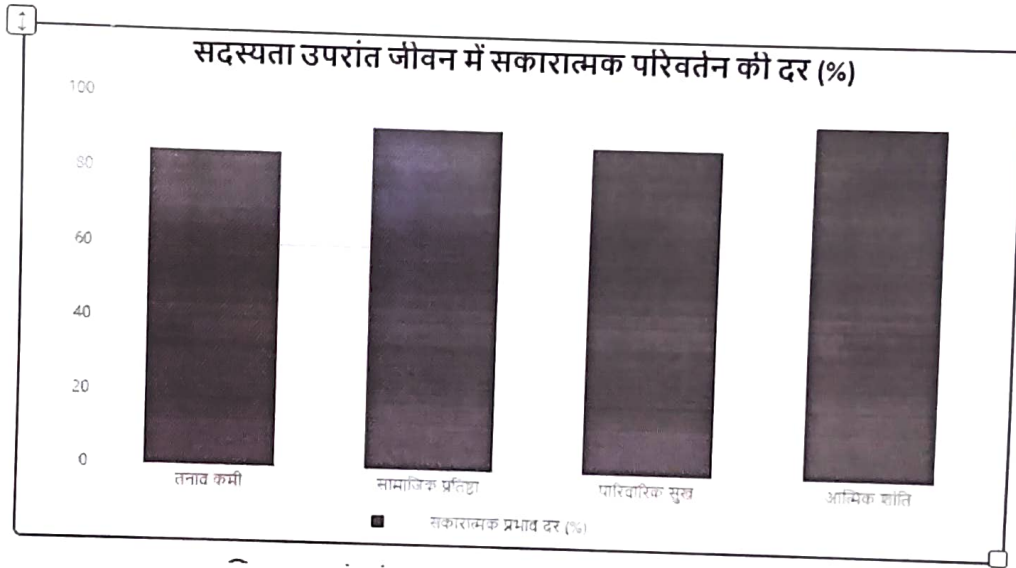
राष्ट्र की अखंडता और विश्व शांति ही मानवता के अस्तित्व की पहली शर्त है। आपका योगदान एक स्वर्णिम युग की नींव रखता है।

क्र०	कारण एवं लाभ	विस्तृत विवरण एवं प्रभाव
1.	सांप्रदायिक दंगों, हिंसा और तनावों का स्थायी रोकथाम	तनावपूर्ण स्थितियों में शांति मार्च, सर्वदलीय संवाद और समझाइश द्वारा हिंसा को भड़कने से रोकना।
2.	राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता का सशक्तिकरण	विभाजनकारी ताकतों के मंसूवों को नाकाम कर देश के भीतर अटूट भाईचारे की दीवार खड़ी करना।
3.	संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में भागीदारी	विश्व शांति, असमानता उन्मूलन और सतत विकास के अंतरराष्ट्रीय लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर लागू करना।
4.	भावी पीढ़ी को एक नफरत-मुक्त, सुरक्षित और हरा-भरा विश्व देना	अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा समाज छोड़ जाना जहाँ कोई किसी से धर्म के नाम पर न लड़े।
5.	युद्ध, हथियारों और परमाणु खतरों के विरुद्ध मुखर आवाज	वैश्विक शांति सम्मेलनों के जरिए युद्ध की विभीषिका के विरुद्ध शांति और अहिंसा की वकालत।
6.	वसुधैव कुटुम्बकम् के प्राचीन संदेश का वैश्विक प्रसार	भारतीय ऋषि परंपरा के इस अमर विचार को वैश्विक कूटनीति और जनमानस का हिस्सा बनाना।
7.	धार्मिक कट्टरपंथ और आतंकवाद की जड़ों पर वैचारिक प्रहार	सच्चे धर्म की व्याख्या करके युवाओं को उग्रवाद और आतंकवाद के झूठे बहकावे से बचाना।
8.	लोकतांत्रिक संस्थाओं, संविधान और मानवाधिकारों की रक्षा	प्रत्येक नागरिक की गरिमा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मौलिक अधिकारों के प्रति सजगता।
9.	इतिहास में एक सकारात्मक योगदानकर्ता के रूप में अमरता	जब इतिहास लिखा जाएगा, तो आपका नाम समाज को जोड़ने वालों में होगा, तोड़ने वालों में नहीं।
10.	मृत्यु पर्यंत यह परम संतोष कि मैंने जीवन में किसी से नफरत नहीं की'	जीवन के अंतिम क्षणों में आत्म-संतुष्टि का यह पावन भाव कि मैंने इस धरती को पहले से थोड़ा अधिक सुंदर और स्नेहमयी बनाया।

11:— सदस्यता के प्रभाव का बहुआयामी विश्लेषण

सदस्यता ग्रहण करने के उपरांत एक साधारण व्यक्ति के जीवन में आने वाले सकारात्मक बदलावों का अनुमानित व्यक्तिगत व सामाजिक प्रभाव प्रतिशत निम्न प्रकार है :-

क्र०	जीवन का प्रमुख आयाम	सकारात्मक प्रभाव दर
1.	मानसिक शांति एवं तनाव-मुक्ति	85:
2.	सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पहचान	92:
3.	पारिवारिक सौहार्द एवं संस्कार	88:
4.	आत्मिक संतोष एवं जीवन सार्थकता	95:



12. सदस्यता प्रक्रिया एवं संकल्प

अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद की सदस्यता किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग या राष्ट्रीयता के सत्यनिष्ठ, विचारशील एवं शांतिप्रिय व्यक्ति के लिए खुली है। सदस्यता ग्रहण करने की सरल प्रक्रिया इस प्रकार है:-

- सदस्यता आवेदन पत्र (ऑनलाइन या ऑफलाइन) को पूर्ण विवरण के साथ भरें।
- परिषद के सर्वधर्म सद्भाव, विश्व शांति एवं मानव सेवा के संकल्प पत्र पर अपनी सहमति व्यक्त करें।
- स्थानीय या राज्य इकाई द्वारा सत्यापन के उपरांत आधिकारिक सदस्यता पहचान पत्र एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करें।
- अपनी सुविधानुसार परिषद के सेवा प्रकल्पों, विचार गोष्ठियों या शांति अभियानों में सक्रिय योगदान दें।

13. निष्कर्ष एवं प्रेरणा संदेश

“न कोई पराया, न कोई बैरी, सब घट व्यापै राम।”

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥”

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव / National Office Secretary
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religions

अध्यक्ष / सचिव
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद

स्वीकृत / Approved
अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद
International Council of Religion.

अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषद केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक चेतना है। एक ऐसी चेतना जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। उपरोक्त 100 कारण और लाभ यह स्पष्ट करते हैं कि जब आप इस पावन अभियान से जुड़ते हैं, तो आप केवल समाज को नहीं देते, बल्कि आपका स्वयं का जीवन भी असीम शांति, सुरक्षा, प्रतिष्ठा और आत्मिक आनंद से भर जाता है।